विचार बिन्दु

'उदास मत होना क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, सामने नहीं पर आसपास हूँ, पलकों को बंद कर दिल से याद करना, मैं और कोई नहीं तेरा आत्म विश्वास हूँ।'

- भगवान

पुराने वनों का संरक्षण सबसे बड़ा प्राकृतिक जलवायु समाधान है

ऐसे वन जो विकास के उन्नत चरण में हैं या जहाँ विविध प्रजातियों के पुराने, मोटे और बड़े वृक्षों की बहुतायत है उन्हें दुनिया प्राइमरी फॉरेस्ट्स या ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के नाम से जानती है। ऐसे वनों के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक महत्त्व पर विश्व भर में बड़ी शोध हुई है। ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स की अभी भी कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। फिर भी इन वनों में प्रमुख प्रजातियों की लंबी उम्र, प्राकृतिक गड़बड़ी का कम से कम होना, मानव हस्तक्षेप का कम होना, छाया-सहिष्णुता या छाया में भी उग सकने वाली प्रजातियों की बहुलता, विशिष्ट संरचनाओं, जैसे बड़े-बड़े पेड़, खोखलों में घोंसले बनाने वाले पक्षियों की उपस्थिति और बहुतायत, भारी-भरकम पुराने वृक्षों के यत्र तत्र गिरे-पड़े संचित सूखे तने, मिट्टी के ऊपर पत्तियों और सूखी टहनियों की मोटी परत आदि लक्षणों के संदर्भ में पहचाना और परिभाषित किया जाता है। इन क्षेत्रों में मिलने वाले बड़े वृक्षों में मधुमक्खियों के छत्ते भी प्राय: देखे जाते हैं। इसके अलावा बड़े वृक्षों के मुख्य तने में छाल में निवास करने वाले विविध प्रजातियों के कीड़े मकोड़े पाये जाते हैं। सैप्रोजायलिक कवक, लाइकेन तथा कीड़ों की प्रजातियां बड़ी संख्या में सूखी गिरी पड़ी लकड़ी पर निर्भर होती हैं।

ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट के नीचे की मिट्टी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें पोषक तत्वों की प्राय: कोई कमी नहीं पाई जाती। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषकतत्व भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं क्योंकि यदि आग, चराई और कटान नहीं हो रहा है तो बायोजियोकेमिकल चक्र सुचारु रुप से चलते हैं। ऐसा संभव है ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के आसपास कोई नदी नाला या नम भूमि इत्यादि हो। प्राय: यह भी देखा गया है कि ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स में पौधों और प्राणियों की जो प्रजातियां मिलती हैं वे समीपवर्ती वन क्षेत्रों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में प्राय: बड़े बीजों वाली प्राणी-विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

उष्णकटिबंधीय वनों में जहां प्रजातियों की विविधता और प्राकृतिक वातावरण पर मानव दबाव दोनों ही अधिक हैं, भूमि-उपयोग परिवर्तन जैव-विविधता को गंभीर खतरे में डालते हैं। कृषि, लकड़ी के लिये कटान, उद्योगों की स्थापना और अन्य उपयोगों के लिये उष्णकटिबंधीय वनों के तेजी से बदलाव उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को नष्ट कर देते हैं। एक शोध जो 138 अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस का उपयोग कर की गयी, के परिणाम उष्णकटिबंधीय जंगलों में मानवीय दखल के कारण विक्षोभ और भूमि रूपांतरण से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव का वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करते हैं (देखें, एल. गिब्सन इत्यादि, नेचर, 478(7369): 378-381, 2011)। इस अध्ययन में प्राथमिक वनों जिनमें कोई मानवीय दखल नहीं था और बिगड़े वनों जिनमें मानवीय दखल था, में जैव-विविधता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। यह पाया गया अवक्रमित या बिगड़े वनों में जैव-विविधता की स्थिति तमाम कारणों से बहुत ख़राब थी। यह वैश्विक शोध निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है की वन-विनाश के विविध कारणों का उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त एवं अन्य शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जब उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को बनाये रखने की बात आती है, तो प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है (देखें, जे. बार्लो इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द नेशनल अकैडमी ऑफ़ साइंसेज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, 104(47):18555-18560, 2007)।

संपूर्ण विश्व के कुल 23 से 26 प्रतिशत वन ही अब प्राइमरी या ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स के रूप में बचे हैं। राजस्थान में कई जिलों में ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स अभी भी बचे हुये हैं, हालांकि ऐसे वन उष्णकटिबंधीय शुष्क क्षेत्रों में विशेष रुप से संकटापन्न हैं। संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकड़ी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को बड़ी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बड़े वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहड़ा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर भैंसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बड़े होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्रायः सतही आग ही लगी है।

संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकड़ी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ठोथ फॉरेस्ट्स को बड़ी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बड़े वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहड़ा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर भैंसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बड़े होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्रायः सतही आग ही लगी है।

पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। ऐसे वनों के संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ केवल इन वनों को केन्द्रित कर बनाये जाने के बजाय सम्पूर्ण भू-परिदृश्य के स्तर पर बनाना आवश्यक होता है। पहली बात इनमें बड़े वृक्षों की बहुतायत के कारण बड़ी मात्रा में कार्बन जमा होता है और सैकड़ों साल तक होता रहता है, इसीलिये ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को विश्व के कार्बन भण्डार के रूप में जाना जाता है। क्लाइमेट चेंज मिटीगेशन के लिए यह भण्डार अति महत्वपूर्ण है (देखें, एस. लुस्स्येर्ट इत्यादि, नेचर, 455(7210):213-215, 2008)। दूसरी बात यह है कि पुराने पेड़ों में अपेक्षाकृत स्थिर विकास दर होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध उल्लेखनीय प्रतिरोध देती है (देखें, एम. कोलेंगेलो इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 801,149684, 2021)। इसके साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे वन अन्य क्षेत्रों में वनों के पुनर्स्थापन के लिये उन प्रजातियों के बीजों और जैव-विविधता के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं जो लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु उष्णकटिबंधीय वनों के अन्य क्षेत्रों से स्थानीय रुप से विलुप्त हो चुकी हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, कन्जर्वेशन बायोलॉजी, 17(2):633-635, 2003)।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये देश के विभिन्न राज्यों में सभी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को चिन्हित कर संरक्षण व संवर्धन एवं सतत विकास किया जाना आवश्यक है। इन क्षेत्रों के अंदर पुराने और बड़े वृक्षों का संरक्षण और साथ में संपूर्ण क्षेत्र का संरक्षण दोनों को ही ध्यान रखना आवश्यक है। यहाँ चराई और कटाई से बचाव के साथ-साथ यहां सूखी गिरी पड़ी लकड़ी को भी बाहर निकालने से रोकना आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सूखे गिरे पड़े वृक्ष भी तमाम प्रजातियों के संरक्षण के लिये आवश्यक हैं।

यदि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं हो रहा है तो वनों के वितान में जहां खुले स्थान मिल रहे हैं वहां पर उसी प्रकार की प्रजातियों का रोपण आवश्यक है जो ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट में पाई जाती हैं। ऐसी प्रजातियां प्राय: बड़े बीजों वाली और चौड़ी पत्ती वाली होती हैं। बड़े बीज होने से इनका विकीर्णन बड़े शरीर वाले प्राणियों द्वारा ही हो सकता है परंतु चूंकि अनेक क्षेत्रों से बड़े शरीर वाले प्राणी विलुप्त हो चुके हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण, सीधी बुवाई और डंडारोपण करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में बड़े बीजों वाली प्रजातियों में आम, महुआ, जामुन, अर्जुन, बहेड़ा, सादड़, कणज, घटबोर, लिसोड़ा, बीजासाल, खाखरा, कड़ाया, सीताफल, बेल, नीम, कचनार, तेंदू, बिस्तेंदू, गोदल, ऊंबिया, इमली, सागवान, बेर, खजूर, अचार या चारोली, कुसुम, हिंगोट, अरीठा, आदि शामिल हैं। कुछ ऐसी प्रजातियाँ भी उगाना चाहिये जो फलों के लिये प्रसिद्ध हैं, भले ही वे छोटे बीज वाली हों। आँवला, बरगद, कैंथ गूलर, पीपल, कैर, लिसोड़ा, जाल, खेजड़ी आदि फल के लिये जानी जाती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, अरावली के वन्य वृक्ष: वनवर्धन एवं पौधशाला प्रबंध, पृष्ठ 1-24, 1992)।

चूंकि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स का दायरा धीरे धीरे बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सबसे उपयोगी यह है कि ऐसे क्षेत्रों को फॉरेस्ट रेस्टोरेशन के लिये चयनित किये जा रहे बड़े क्षेत्रों के अंदर लेकर बड़े दायरे में बीजारोपण व बहुत आवश्यक हो तो वृक्षारोपण करना चाहिये। बाहर के दायरे में जहां प्रजाति विविधता कम है या क्षेत्र खाली हो गये हैं वहां पर अर्ली-सक्सेशनल, मिड- सक्सेशनल, और लेट-सक्सेशनल प्रजातियों के मिश्रण की मृदा व जल संरक्षण के साथ सीधी बुवाई किया जाना उपयोगी रहेगा। साथ ही थोड़ी-बहुत वनस्पति जो उस क्षेत्र में हो उसका संरक्षण करना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने से धीरे-धीरे ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट का दायरा बढ़ने लगेगा। इस रणनीति का एक लाभ यह भी है कि क्षेत्र में पक्षियों द्वारा विकीर्णित होने वाले बीजों का विकीर्णन भी पूरे वृक्षारोपण क्षेत्र में बढ़ेगा। सुरक्षित क्षेत्र में होने वाला अंकुरण और पनपने वाले पौधों के सुरक्षित बड़े पौधों के रूप में विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय वनों और जैव-विविधता से मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ हेतु पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

- डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

कहर बरपाती वर्ष 2023 की प्रमुख जलवायु आपदाएं

राम शर्मा

वर्ष 2024 का आगाज हो चुका है। मीडिया में बीते वर्ष 2023 की राजनीतिक, आर्थिक और अपराध जगत की घटनाओं को खूब याद किया गया। लेकिन एक संवदेनशील मुद्दा जलवायु परिवर्तन कहीं न कहीं पीछे छूट गया। हमारे टीवी चैनलों के धुरंधर एंकर राजनीतिक घटनाओं पर खूब गरमा-गरम बहस करते हैं, लेकिन सामान्य मानवी के जीवन से जुड़े जलवायु परिवर्तन जैसे मामलों में कोई चर्चा नहीं की जाती। देश में जिस तरह से पर्यावरणीय विक्षोभ उत्पन्न हो रहे हैं, उसे देखते हुए जरूरी है कि हम जलवायु परिवर्तन के विषय को हमारी चर्चा के केन्द्र बिंदु में रखें। जिस प्रकार देश में आपराधिक घटनाएं बढ़ रही है, उसी प्रकार जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न प्राकृतिक आपदाओं की संख्या में भी बीते साल चिंताजनक रूप से बढ़ोतरी हुई है।

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट और डाउन टू अर्थ द्वारा किए विश्लेषण से पता चला है कि 2023 में जनवरी से सितंबर के बीच भारत ने तकरीबन रोजाना किसी न किसी चरम मौसमी आपदा का सामना किया था। इनमें बाढ़, भूस्खलन, लू, शीत लहर, भारी बारिश और चक्रवात से लेकर बिजली गिरने तक की चरम मौसमी घटनाएं शामिल हैं।

अब तक इन आपदाओं ने देश में 2,923 जिंदगियों को लील लिया है। इतना ही नहीं इन आपदाओं ने कृषि क्षेत्र पर भी गहरा असर डाला है, जिसके चलते 18.4 लाख हेक्टेयर में फसलें प्रभावित हुई और करीब 92,519 मवेशी मारे गए हैं। इसके साथ-साथ इन आपदाओं की वजह से 80,563 घरों को भी नुकसान पहुंचा है। रिपोर्ट के मुताबिक इस दौरान मध्य प्रदेश ने सबसे ज्यादा चरम मौसमी घटनाओं का सामना किया है। जो करीब-करीब औसतन हर दूसरे दिन दर्ज की गई। हालांकि, इन आपदाओं में बिहार में सबसे ज्यादा लोगों की जान गई है।

आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2023 में जून से सितम्बर के बीच जहां बिहार में 642 लोगों की मौत हो गई, वहीं हिमाचल प्रदेश में इन आपदाओं की भेंट चढ़ने वालों का आंकड़ा 365 और उत्तर प्रदेश में 341 दर्ज किया गया। अतीत में, चरम मौसमी घटनाओं को लेकर यह मान्यता थी कि यह ऐसी घटनाएं हैं जो जीवनकाल में एक बार घटित होती है। हालांकि मौजूदा समय में यह धारणा काफी बदल गई है। देखा जाए तो यह किसी एक घटना के बारे में नहीं है, बल्कि इन आपदाओं की बढ़ती संख्या के बारे में है। जो चरम घटनाएं हर सौ वर्षों में यदा कदा एक बार घटती थीं, वे अब हर पांच वर्ष में या उससे भी अधिक बार घटित हो रही हैं।

वहीं जिस तरह से महीने-दर-महीने नए रिकॉर्ड बन रहे हैं, उनसे स्थिति कहीं ज्यादा बदतर हो रही है। और भी बुरा यह है कि यह सब एक साथ घटित हो रहा है। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा गरीब तबके को भुगतना पड़ रहा है। जो न केवल इससे सबसे ज्यादा प्रभावित है, बल्कि बार-बार होने वाली इन घटनाओं से निपटने की अपनी क्षमता को भी तेजी से खो रहे हैं।

इसी प्रकार यदि हम दुनिया की बात करें तो साल 2023 आपदाओं भरा रहा। दुनिया का शायद ही कोई हिस्सा होगा जो इन आपदाओं से प्रभावित न हुआ हो। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा, कहीं भारी बारिश तो कहीं तूफान और ऊपर से जंगल में लगी आग ने इस कदर कहर बरपाया कि उसके नुकसान की भरपाई कर पाना भी मुश्किल है। वहीं दूसरी तरफ बढ़ता वैश्विक तापमान थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। आंकड़ों पर गौर करें तो अब यह करीब-करीब तय माना जा रहा है कि 2023 जलवायु इतिहास का अब तक का सबसे गर्म वर्ष होगा। ऐसे में इन जलवायु आपदाओं का आना लाजिमी है।

2023 में आई इन जलवायु आपदाओं पर क्रिश्चियन एड ने एक नई रिपोर्ट "काउंटिंग द कॉस्ट 2023: ए ईयर ऑफ क्लाइमेट ब्रेकडाउन" जारी की है। इस रिपोर्ट में उन 20 सबसे भयानक जलवायु आपदाओं पर प्रकाश डाला है, जिन्होंने इस साल कहर बरपाया है। इन आपदाओं में बाढ़, सूखा, तूफान और जंगल में लगी आग जैसी जलवायु आपदाएं शामिल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक इन 20 सबसे भयानक जलवायु आपदाओं ने दुनिया के 14 देशों को निशाना बनाया था। इन आपदाओं में बाढ़, सूखा, तूफान और जंगल में लगी आग जैसी जलवायु आपदाएं शामिल हैं।

बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं न केवल भारत को बल्कि समूचे विश्व को स्पष्ट संदेश दे रही है कि यदि हम पर्यावरण सरंक्षण के प्रति सचेत नहीं हुए तो प्रकृति का कहर हमारे अस्तित्व को मिटा देगा। सरकारें चाहे वह किसी देश की हो, कंक्रीट के जंगल बसाने के चक्कर में प्रकृति प्रदत्त जंगलों को उजाडने में लगी हुई है। यदि इन पर रोक नहीं लगाई गई तो इसके गंभीर परिणाम प्राकृतिक हादसों के रूप में भुगतने पड़ेंगे।

- राम शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार।

गांव लाडा का बास में पशुओं में फैली अज्ञात बीमारी

पावटा, (निंस)। उपखंड पावटा क्षेत्र के लाडाकाबास गांव में पशुधन में अज्ञात बीमारी फैल गई है। जिसके चलते पिछले दो दिन में कई पशुपालकों के एक दर्जन के करीब मवेशियों की इस बीमारी से मौत भी हो गई है। पशुपालकों ने जिला कलेक्टर से डॉक्टर्स की टीम भेजकर मवेशियों के उपचार की मांग की है।

ग्राम पंचायत लाडा का बास सरपंच सरोज देवी ने बताया कि 20 दिनों से पशुधन में अज्ञात बीमारी से ग्रस्त है। लोकल मेडिकल टीम द्वारा उनका इलाज भी किया गया लेकिन सब बेकार गया। मवेशियो की मौत अंदर बाहर जगह बदलते हुए सुबह व शाम में हो रही है। वहीं ग्राम पंचायत लाडाकाबास सरपंच

> ■ कुछ दिन में सौ के करीब मवेशियों की हुई है मौत

सरोज देवी सहित ग्रामीणों ने एक मेडिकल टीम गठित कर मवेशियो में फैली अज्ञात बीमारी व उससे होने वाली मौत होने की जाँच की मांग की है। इस बीमारी को जल्द नहीं रोका गया तो जल्द ही आसपास के कई गावों में फेलने का खतरा बना हुआ है। वहीं जिन पशुपालकों के मवेशियों की मौत हुई है उन्हें राहत देने की मांग की है। जिस पर ब्लॉक वेटेनरी कार्यालय पावटा वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी राजकुमार द्वारा मेडिकल टीम का गठन कर निर्देशित करते हुए कहां कि ग्राम लाडाकाबास में अज्ञात बीमारी से पिछले कुछ दिनों में लगभग 100 मवेशियों की मौत हो चुकी है। जिसको लेकर गांवों में कैंप लगाकर अज्ञात बीमारी व उससे होने वाली मौत होने की जांच व मवेशियों के इलाज के लिए कहा है।

दीव में हुए पहले "बीच गेम्स" में मध्य प्रदेश चैम्पियन बना

दीव में हुए बीच गेम्स के सफल आयोजन ने समुद्र किनारे रोमांचक खेल आयोजनों की नींव रखी है : अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली। भारत के पहले मल्टी-स्पोर्ट्स बीच गेम्स द बीच गेम्स-2024 का आयोजन दीव में ब्लू फ्लैग प्रमाणित घोघला बीच पर किया गया। इन खेलों में जमीन से घिरा हुआ मध्यप्रदेश चैंपियन बनकर उभरा। मध्य प्रदेश ने सात स्वर्ण सहित कुल 18 पदकों के साथ पदक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। इस उपलब्धि ने न केवल मध्य प्रदेश के दल की खेल क्षमता को दिखलाया, बल्कि इस राज्य के भीतर विकसित हो रही प्रतिभाओं की गहराई को भी सामने रखा।

महाराष्ट्र ने तीन स्वर्ण सहित 14 पदक जीते, वहीं तमिलनाडु, उत्तराखंड और मेजबान दादरा, नगर हवेली, दीव और दमन ने 12-12 पदक हासिल किए। असम ने 8 पदक जीते, जिनमें से 5 स्वर्ण थे। बेहद दिलचस्प घटनाक्रम में लक्षद्वीप ने बीच सॉकर में स्वर्ण पदक हासिल किया, जो इस प्राचीन द्वीप क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। उन्होंने कड़े मुकाबले वाले फाइनल में महाराष्ट्र को 5-4 से हराया। लक्षद्वीप की जीत ने न केवल पदक विजेताओं की विविधता को बढ़ाया बल्कि दीव बीच गेम्स-2024 के समावेशी और

पदक विजेता खिलाड़ियों को अतिथियों ने सम्मानित किया।

राष्ट्रव्यापी असर को भी दिखलाया। 4 से 11 जनवरी तक खेलों की ये उत्कृष्टता अपने चरम पर रही। इस दौरान 205 मैच अधिकारियों के सहयोग से 28 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 21 वर्ष से कम उम्र के 1404 एथलीटों ने विभिन्न प्रकार के खेलों में भाग लिया। इन खेलों को रोज़ाना दो सत्रों में बांटा गया था। सुबह का सत्र सुबह आठ बजे से शुरू होकर दोपहर को समाप्त होता था, इसके बाद दोपहर का सत्र तीन बजे शुरू होता था। इस शेड्यूलिंग ने न केवल उपयुक्त मौसम में एथलीटों के प्रदर्शन को अनुकूलित किया, बल्कि उत्साही दर्शकों को भी एक अनूठा और आकर्षक विज़ुअल अनुभव मिला।

इस दौरान रस्साकशी में रणनीतिक दमखम के प्रदर्शन, समुद्री तैराकी के लुभावने करतबों, पेंचक सिलाट की मार्शल आर्ट्स वाली कलात्मकता, मल्लखंब की कलाबाजियों, बीच वॉलीबॉल की तेज गति वाली उछलकूद, बीच कबड्डी के रणनीतिक द्वंद्व और बीच सॉकर के बिजली सी फुर्ती वाले किक और गोल्स ने इस आयोजन को एक अनूठी ऊर्जा से भर दिया। बीच बॉक्सिंग के आगाज़ ने इस आयोजन में उत्साह की एक अतिरिक्त परत जोड़ दी। इसने प्रतिभागियों और दर्शकों दोनों को मंत्रमुग्ध कर दिया और देश की एथलेटिक यात्रा में ये एक विशेष क्षण बन गया।

केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर इस आयोजन के लिए अपना समर्थन और उत्साह व्यक्त किया। उन्होंने लिखा, "एथलीटों की ऊर्जा और दीव की सुंदरता ने एक ऐसा माहौल बुना है जो पहले कभी नहीं देखा गया। ये मंत्रमुग्ध करने वाला और उत्साह बढ़ाने वाला है।" उन्होंने कहा कि भारत के समुद्र तटों को एक नया जीवन प्रदान करने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन ने गुजरात के तट से कुछ दूर दीव में पहली बार हुए बीच गेम्स के साथ एक नया मोड़ ले लिया है।

भारत के पास भौगोलिक दृष्टि से दुनिया के कुछ सबसे खूबसूरत समुद्र तट हैं। भारत के 12 समुद्र तटों को स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देने वाले दुनिया के सबसे स्वच्छ समुद्र तटों वाला ब्लू फ्लैग प्रमाणन दिया गया है। हालांकि, देश के कई समुद्र तटों की उतनी यात्रा नहीं की गई है, जितनी की जानी चाहिए। इसलिए दीव बीच गेम्स की सफल मेजबानी एक सुखद खबर है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 14 जनवरी 2024

पौष मास शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, विक्रम सम्वत 2080, धनिष्ठा नक्षत्र दिन 10.22 तक, व्यतिपात योग रात्रि 2.39 तक, गरकरण प्रात: 8.00 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मेष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

आज राजयोग सूर्योदय से प्रात: 8.00 तक है। रवियोग दिन 10.22 से आरम्भ होगा। आज भद्रा सायं 6.30 से आरम्भ होगी।

आज मकर संक्रांति पर्व (परम्परानुसार), विनायक चतुरथी, व्यतिपात पुण्य है। आज चतुरथी तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघडिया - शुभ 8.40 से 9.58 तक, चर - 8.40 से 9.54 तक, लाभ-अमृत 9.54 से 12.36 तक।

राहुकाल - 4.30 से 6.00 तक, सूर्योदय 7.22 सूर्यास्त 5.50

मेष
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आज धार्मिक-मांगलिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

मिथुन
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। मानसिक तनाव और भय बना रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बडेगी। नौकरी पैशा व्यक्तियों को भाग-दौड से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आज दिनचर्या में सुधार होगा। घर-परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। आज मित्रों-रिश्तेदारों से संपर्क हो सकते है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

धनु
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
मानासक तनाव स राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बडेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

मीन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे।